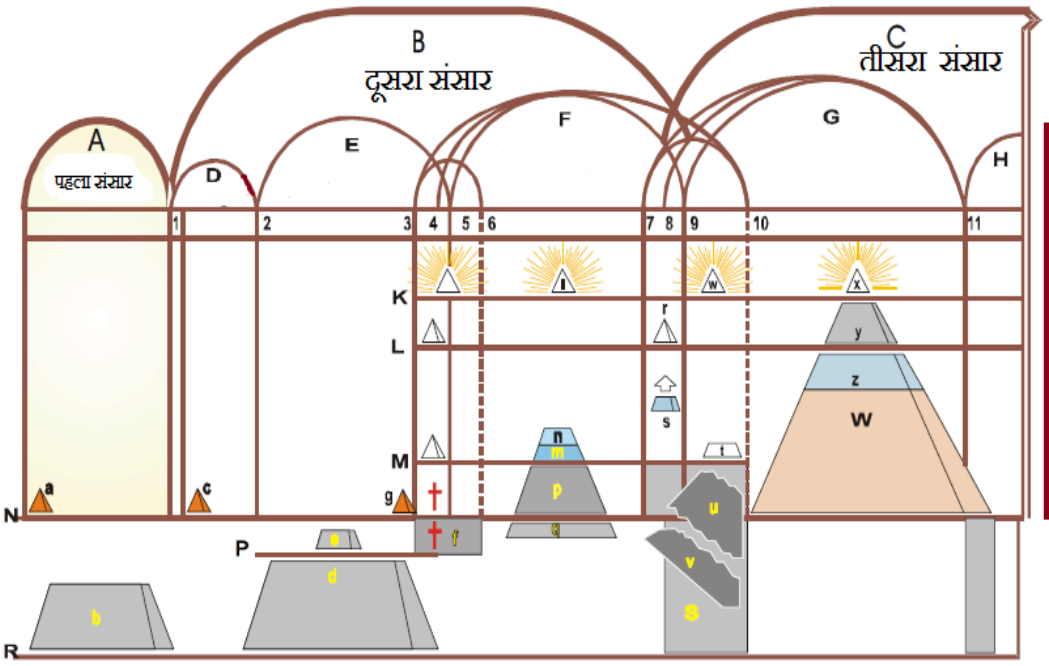

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

आज हम **"युगों की दिव्य योजना"** के **दूसरे भाग** को पढ़ेंगे--जो कि
-**दूसरे संसार** और **तीसरे संसार** का विस्तृत अध्ययन है।
अक्षर '**B**' दूसरे संसार की अवधि को दर्शाता है।

ये "दूसरा संसार" बिल्कुल **उसी दिन** शुरू हुआ जिस दिन बाढ़ **शुरू** हुई। **(उत्पत्ति 7:11)**
-- इसलिए कि **उस दिन** एक संसार (**पहला**) समाप्त हो गया और एक अन्य (**दूसरा**) संसार शुरू हो गया!

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

नूहा और उसका परिवार जहाज के अन्दर **एक वर्ष** और **दस दिन** तक रहे। (375 दिन) - **(उत्पत्ति 7:11/8:14)**

चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर वर्षा होने के कारण पृथ्वी पर बाढ़ आई लेकिन धरती को सूखने में पूरा एक वर्ष और दस दिन लगा।

दूसरे संसार की अवधि को **तीन** भाग में बांटा गया है, जिसे **"युगों"** के नाम से जाना जाता है!

1. पहली अवधि को **--पितरों का युग--** कहते हैं-- जब परमेश्वर का सम्पर्क केवल एक-एक लोगों के साथ या "पितरों" के साथ होता था।

2. दूसरी अवधि को **--यहूदियों का युग--** कहते हैं जब परमेश्वर का सम्पर्क केवल याकूब के बारह पुत्रों के परिवार के साथ था--जिसे इस्राएल का राष्ट्र कहा जाने लगा।

3. तीसरी अवधि को **-- सुसमाचार का युग--** कहते हैं जब परमेश्वर का सम्पर्क यीशु पर विश्वास करने वालों और उनके चेलों के साथ है।

अब हम विस्तार में अध्यन्न करते हैं -

बाढ़ के **समाप्त** होने के बाद और धरती के सूखने के बाद हम केवल **नूहा और 7 लोगों (2 पतरस 2:5)** को ही देखते हैं, जो पहले संसार में से बच गए थे!

इस प्रकार इन आठ लोगों से ही दूसरा संसार आरम्भ हुआ।

इसके बारे में हम स्पष्ट रूप से इन वचनों में पढ़ते हैं -

उत्पत्ति 9:18,19 "नूहा के पुत्र जो जहाज में से निकले, वे शेम, हाम, और येपेत थे; और हाम कनान का पिता हुआ। नूहा के तीन पुत्र ये ही हैं, और इनका वंश सारी पृथ्वी पर फैल गया"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

अभी की पूरी मानवजाति, **उन्हीं** आठ लोगों में से आती है।

नूहा के पुत्रों का क्रम क्या है?

इसके बारे में इन वचनों में लिखा गया है

उत्पत्ति 5:32 "और नूहा से शेम, और हाम और येपेत को जन्म हुआ"

(और **उत्पत्ति 9:18** वचन में भी पढ़ते हैं)

क्या यही सही **क्रम** है? आइये इस मामले को हम वचनों के द्वारा देखते हैं -

उत्पत्ति 10:21 "शेम, जो सब एबेरवंशियों का मूलपुरूष हुआ, और जो येपेत का ज्येष्ठ भाई था, उसके भी पुत्र उत्पन्न हुए" (यह वचन का हिन्दी बाईबल में गलत अनुवाद है।)

और...

उत्पत्ति 9:24 "जब नूहा का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उससे क्या किया है"

जी हाँ! **येपेत** सबसे बड़ा पुत्र था और हाम सबसे छोटा पुत्र था! देखा!

देखिए! हमें बाईबल को कितनी सावधानी से पढ़ना चाहिए!

क्योंकि उत्पत्ति 5:32 वचन में नूहा के पुत्रों के नाम सही क्रम में न होकर आगे पीछे थे!

[ध्यान दें: उत्पत्ति 10:21 वचन का हिन्दी अनुवाद सही नहीं है। हिन्दी में येपेत को ज्येष्ठ पुत्र न बता कर शेम को बताया गया है। अंग्रेजी के KJV बाईबल के अनुसार येपेत ज्येष्ठ या सबसे बड़ा पुत्र है।]

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

उत्पत्ति 9:19 वचन के अनुसार नूहा के तीन पुत्रों का वंश सारे पृथ्वी पर फ़ैल गया। आइए हम एक-एक करके इनके बारे में पढ़ें -

येपेत

आइये हम येपेत से निकली जाती के बारे में अध्यन्न करें–

इसके बारे में हम उत्पत्ति 9:27 वचन में पढ़ते हैं -

उत्पत्ति 9:27 "परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो"

ये वचन एक भविष्यवाणी है जो एक ऐसी जाती के बारे में बताता है जो कि **शासन** और **प्रभुता** करने वाली जाती है -- दूसरों पर हावी या प्रबल लोग!

ये लोग कौन हैं?

क्यों! -- ये **श्वेत** जाति के लोग हैं -- **गोरे लोग** या **सफ़ेद नस्ल** की जाति के लोग! इसलिए येपेत इन गोरे लोगों का **पिता** ठहरा। ये लोग पहले यूरोप में बसे और उसके बाद उत्तर और दक्षिण अमेरिका में फ़ैल गए।

पृथ्वी के ज्यादातर राजा इसी जाति में से आये और व्यापारी और **राजनेता** भी इसी जाती में से आते हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

शेम

आइये हम शेम से निकली जाती के बारे में अध्यन्न करें--

उत्पत्ति 9:26 “फिर उसने कहा, “शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है”, और कनान शेम का दास हो”

[ध्यान दें: इस वचन में “Lord God” का अनुवाद करते समय हिन्दी बाईबल में "प्रभु परमेश्वर" को "यहोवा परमेश्वर" लिखा गया है।]

इस वचन में शेम का **"प्रभु परमेश्वर"** कौन है?

ये वही हैं जिन्होंने अदन की वाटिका में आदम से बात की थी और उसके साथ चलते थे, ये वही हैं जिन्होंने कई सौ सालों के बाद इस्राएल के बेथलेहम नामक स्थान में जन्म लिया था और नाम **"यीशु"** रखा गया!

जी हाँ! प्रभु यीशु का **पृथ्वी पर मूल** शेम के वंश से आता है! शेम जाति के लोग एशिया का प्रतिनिधित्व करते हैं -- इन्हें **मंगोल जाति** भी कहा जाता है -- ये जाति एशिया के इन स्थानों में पाई जाति है --चीन, मलेशिया, बर्मा, इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस और अन्य जगह।

ये लोग स्वभाव से धार्मिक होते हैं और शान्तिपूर्ण लोग हैं, जो परमेश्वर की तलाश में रहते हैं!

> कल्पना करें कि यदि चीन या भारत येपेत जाति से होते तो उनके पास भी शासन करने की आत्मा होती!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसलिए ये देखा गया है कि **ज्यादातर** धर्मों की **उत्पत्ति** एशिया में हुई है-- **उदाहरण**: यहूदी धर्म, बौद्ध धर्म, हिन्दु धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, शिन्तो धर्म, तैओ धर्म, कन्फूशिवाद (चीन) धर्म, इस्लाम, आदी, आदी!
लेकिन भारत देश के बारे में जो कि एशिया में है, हम **बाद** में देखेंगे कि वे शुद्ध शेम जाति से **नहीं** है।

हाम

नूहा के सबसे **छोटे** पुत्र के बारे में हम कुछ बहुत अजीब पढ़ते हैं --

उत्पत्ति 9:20-21 “और नूहा किसानी करने लगा, और उसने दाख की बारी लगाई। और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया”

नूहा को क्या हुआ था?

क्या वह शराबी था?

आइये हम देखते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

नूहा एक **"किसान"** था --अंगूर की खेती करने वाला किसान! उसने पहले संसार में दाख की बारी लगाई थी और इसीलिए जब वो दूसरे संसार में आया **तब भी** उसने **वही किसानी की**।

उसने अंगूरों की कटाई करके, उसे निचोड़ कर अंगूर के रस को बड़े डब्बे में भर कर रख दिया और धीरे - धीरे उसमें से अंगूर के रस को पीने लगा, जैसा की वह **पहले संसार** में पीता था। पहले संसार की तुलना में दूसरे संसार में उसी अंगूर के रस को पीने में एक बड़ा **अन्तर** था!!

बाढ़ के बाद **वातावरण** बदल गया था!
हम **उत्पत्ति 7:11** वचन में देखते हैं -

उत्पत्ति 7:11 "... और आकाश के झरोखे खुल गए"

कि पृथ्वी की बाहरी सतह के ऊपर **"जल के आवरण"** (कैनोपी) की कड़ियाँ टूटकर **गिर** गयी थी।

इस कारण से वातावरण में **जबरदस्त** बदलाव आ गया। एक ठण्डा "वातानुकूलित" वातावरण अत्यन्त ठण्डा या गर्म मौसम में बदल गया।

अब सूरज की किरणें पृथ्वी की सतह पर **सीधे** पड़ने लगी -- जिसके कारण अंगूर के रस में खमीर उठा और **किण्वन** प्रक्रिया के द्वारा वह अंगूर का रस **शराब** में बदल गया।

☞ **इसके बारे में नूहा न तो जानता था और न ही उसको इस बात का कोई अन्दाजा था!!**

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

और इस प्रकार से वह **<u>अनजाने</u>** में **मतवाला** हो गया!

शराब किसी के "दिमाग" पर असर करती है जिसके कारण आदमी का संतुलन बिगड़ जाता है और वो **"लड़खड़ाकर चलने"** लगता है!

इस कारण से नूहा ने **पहली** बार मतवाला होने के कारण जब तम्बू में कपड़े बदलने कि कोशिश की होगी तो वो असफल हो गया होगा और शराब के नशे के कारण आधे कपड़े में तम्बू के अन्दर नंगा ही सो गया होगा।

तब क्या हुआ...? आइये हम वचन में पढ़ते हैं--

उत्पत्ति 9:22 "तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बतला दिया"
तब शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कन्धों पर रखा, और "पीछे" की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया... (उत्पत्ति 9:23)।

इसके बाद अगले दिन जब नूहा का नशा उतर गया तो क्या हुआ?
इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं -

उत्पत्ति 9:24,25 "जब नूहा का नशा उतर गया, तब उसने <u>जान लिया</u> कि उसके छोटे पुत्र ने <u>उससे क्या किया है</u>। इसलिये उसने कहा, "कनान शापित हो"...

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

नूहा **"कनान"** को क्यों शाप देता है, जबकी अपराधी उसका पिता हाम था?

क्या यह बहुत अनुचित नहीं है?

नूहा ने कनान को जो जन्मा भी नहीं था उसे शाप क्यों दिया??

तम्बू में नूहा और हाम के बीच में **सचमुच** में **क्या** हुआ था?

निश्चित रूप से नूहा एक अन्यायपूर्ण आदमी **नहीं** रहा होगा!

तो आइये हम देखते हैं कि **वास्तव** में ऐसा क्या हुआ था जिसने नूहा को **इतना क्रोधित** कर दिया की उसने कनान को जो **जन्मा भी नहीं** था, उसे शाप दे दिया!

हमें ये याद रखना चाहिए कि हाम पहले संसार से आया था।

आइये हम पढ़ें कि पहले संसार के बारे में क्या लिखा हुआ है, वचनों में --

उत्पत्ति 6:5 "और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है"

जी हाँ! हाम जिस संसार से आया था उसकी **दशा** यही थी और उसमें हाम ने बुराई देखी थी!

उस संसार में जो **"बुराई"** थी वो क्या थी? इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं -

रोमियो 1:27 "वैसे ही पुरूष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरूषों ने पुरूषों के साथ निर्लज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया"

जी हाँ! सबसे बड़ी बुराई जो कि पहले में थी वो थी **समलैंगिकता** (पुरुषों का पुरुषों के साथ भोग करना)!

सदोम और अमोरा नगरों में भी यही पाप होता था।

(सन्दर्भ में **उत्पत्ति 19: 4,5** वचन पढ़ें।)

यघपि पवित्र शास्त्र **स्पष्ट रूप से इसके बारे में नहीं कहता है**, लेकिन हम इन वचनों के लिखित **सबूतों** के माध्यम से इस मामले को अपना सकते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

➡ **1** उत्पत्ति 9:24 "जब नूहा का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उसके साथ क्या किया है"

➡ **2** उत्पत्ति 9:22 "तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा"

➡ **3** उत्पत्ति 10:19 "और कनानियों की सीमा सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर अज्जा तक और फिर सदोम और अमोरा"

इस कारण हम यह **राय** दे सकते हैं कि हाम ने **अपने** पिता के साथ **समलैंगिकता (पुरुषों का पुरुषों के साथ भोग करना)** करने का अपराध किया होगा, जिसने नूहा को इतना क्रोधित कर दिया होगा कि उसने हाम के **पूरे** वंश जो कि **कनान** से शुरू होता है, को शाप दे दिया।

कनान उस **जाति के लोगों** में **पहला** था जो शापित हुआ...

☞ -- इस शापित जाति से **अफ़्रीकी लोग** आए!

इन्हें **"निग्रो"** जाति भी कहते हैं।

सभी इस जाति पर के **शापित** प्रभाव को देख सकते हैं -

☞ **बालों** को कसकर घुंघरैला रखते हैं, जैसे कि बाल को आग के पास लाया गया हो।

☞ उनकी **त्वचा** काली है जो कि जली हुई जैसे मालूम पड़ती है।

☞ उनकी **नाक** भद्दी और सूजी हुई और बड़ी है।

☞ उनके **चेहरे** और मुखाकृति पर कोई सुन्दरता नहीं है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस विषय के प्रिय अफ्रीकी पाठकों:
हमारा इरादा अफ्रीकी लोगों में से किसी के व्यक्तिगत भावनाओं को चोट पहुँचाना नहीं है लेकिन केवल बाईबल से यह दिखाने की इच्छा है कि अफ्रीकी जाति की सृष्ठभूमि क्या है और वे कैसे अस्तित्व में आये।

कनान और उसके बच्चे निग्रो हैं, इसे हम एक वचन में पढ़कर देख सकते हैं --

उत्पत्ति 9:25 "...कनान शापित हो: वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का दास हो"

जी हाँ! नीग्रो जाति का इतिहास हमें बताता है कि वो **गुलामी** करते थे।
1870 ई० तक सभी देशों के बीच में इनकी **खरीद** और **बिक्री** होती थी।
डेविड लिविंगस्टोने के प्रयाशों के कारण इस जाति को गुलामी से स्वतंत्रता मिली।

अब हम देखते हैं कि "दासों का दास" का क्या मतलब है?
क्या येपेत और शेम जाति के लोग भी किसी के दास या गुलाम थे?
जी हाँ! एक वचन में देखते हैं कि येपेत और शेम जाति के लोग किसके दास थे--

रोमियो 6:16 "क्या तुम नहीं जानते कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की समान सौंप देते हो उसी के दास हो: चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, जिसका अन्त धार्मिकता है"

जी हाँ! इसलिए **पूरा संसार** पाप का दास है!
और कनान जाति के लोग इन - **"पाप के दासों"** का गुलाम बन गए!

अब हम **भारत** देश पर विचार करें!
यहाँ के लोग किस जाति में से आते हैं? क्या भारतीय पूरी तरह से शेम जाति में से हैं? इसका उत्तर हमें भारत के इतिहास में से मिलता है!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

➡ 1. **आर्य जाति** के लोग जो कि पूर्वी यूरोप से आकर उत्तर भारत में बसे थे, वे मुख्य रूप से **येपेत के वंश** में से थे।

➡ 2. **द्रविड़ जाति** के लोग जो अफ्रीका से आकर दक्षिण भारत में बसे थे वे मुख्य रूप से **हाम या कनान के वंश** से थे।

इसके अलावा **शेम वंश** के लोग नागालैंड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश में पाये जाते हैं।

ये सब जाति जाति के लोग मिश्रित और अन्तर्मिश्रण हो गये हैं यानी परस्पर में मिल गये हैं!

इस कारण से हम दक्षिण भारत में किसी को गोरा और घुंघराले बालों वाला और मोटी नाक और मोटे होठों में देखते हैं और **दूसरों** को काले रंग का देखते हैं और उनके बाल सीधे होते हैं और उनकी नाक सुन्दर होती है!! **यह एक बड़ा मिश्रण है!**

भारतियों की **मानसिकता** में भी हम बहुत विभिन्नताएं पाते हैं!

☞ न तो वो किसी के पूरी तरह से अधीन होते हैं और न ही किसी पर हावी होना चाहते हैं या न ही किसी की अगुवाई करना चाहते हैं और धार्मिक परम्पराओं में **अति** भी नहीं करते हैं!!

☞ **पूरी दुनिया में निश्चय भारत एक अत्यन्त ख़ास देश है!!**

ध्यान दें, भारत के बारे में बाईबल में एक वचन में उल्लेख किया गया है --

यशायाह 2:6-8 "तू ने अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्व देश के व्यवहार पर तन मन से चलते और पलिश्तियों के समान टोना करते हैं, और परदेशियों के साथ हाथ मिलाते हैं। उनका देश चान्दी और सोने से भरपूर है, और उनके रखे हुए धन की सीमा नहीं; उनका देश घोड़ों से भरपूर है, और उनके रथ अनगिनित हैं। उनका देश मूरतों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को, जिन्हें उन्होंने अपनी उंगलियों से संवारा है, दण्डवत करते हैं"

जी हाँ! इस वचन में भारत के देश का **स्पष्ट जिक्र** किया गया है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

पूरी दुनिया में कौन सा ऐसा देश होगा जहाँ भारत से ज्यादा मूर्तियां होंगी?

इस तरह से हमने देखा कि किस तरह ये दुनिया में की विभिन्न जातियाँ **शेम, हाम और येपेत** से जाति है -- जो कि नूहा के तीन पुत्र थे।

अब हम दूसरे संसार के **तीन** उपविभाग यानि "युगों" के बारे में पढ़ते हैं।

1. पितरों का युग (कुलपतियों का युग)

इस युग की अवधि बाढ़ के **बाद** से आरम्भ होती है और याकूब की मृत्यु तक, ये युग चलता है। इस युग में परमेश्वर **एक--एक** जन से सम्बन्ध रखते थे और उनके साथ वाचा बांधते थे।

ये **महान** व्यक्तियों में से थे और इन्हें **कुलपतियों** या **बपदादों** या पुरखों या पितरों के नाम से जाना जाता है।

इन "कुलपतियों" में **प्रथम नूहा** था और उसके बाद **अब्राहम** आया और उसके बाद **इसहाक** आया और अन्त में **याकूब** आया।

परमेश्वर ने एक वाचा सबसे पहले नूहा के साथ, बाढ़ के बाद बाँधी। **(उत्पत्ति 9:9-11)**

उसके बाद बहुत वर्षों के पश्चात परमेश्वर ने **अब्राम** के साथ सम्बन्ध बनाया जिसका नाम **बाद** में **अब्राहम** रखा गया।
वह **"विश्वास का पिता"** बन गया क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को मानकर अपने **एकलौते प्रिय पुत्र** को बलिदान करने की इच्छा दिखाकर बहुत **बड़ा** विश्वास दिखाया। **(उत्पत्ति 22:1-3)**

अब्राहम नूहा से **दसवीं** पीढ़ी का था और आदम से **बीसवीं** पीढ़ी का।

परमेश्वर ने जब अब्राहम को बुलाया था तब उसकी सृष्ठभूमि क्या थी?
क्या वो सच्चे परमेश्वर का अराधक था?

इसका उत्तर हम इस वचन में पढ़ेंगे --

यहोशू 24:2 “तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, ‘प्राचीन काल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे”

जी हाँ! अब्राहम **मूर्ति पूजकों** की सृष्ठभूमि से आया था!! परमेश्वर ने उसे अपने देश और अपने कुटुम्बियों को छोड़कर उस देश में जाने को कहा जिसे परमेश्वर उसे दिखाने वाले थे। परमेश्वर ने जो कहा यदि अब्राहम उसे मानता है तो परमेश्वर उसके साथ एक बड़ा **वादा** करेंगें और उसे बड़ी आशीष देंगें, जैसा की हम इस वचन में पढ़ते हैं।

उत्पत्ति 12:1-3 “यहोवा ने अब्राम से कहा, “अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम महान करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे”

हम भविष्य के पाठों में अब्राहम के जीवन के बारे में और विस्तार से पढ़ेंगे। अब्राहम के बाद परमेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक के साथ सम्बन्ध बनाया और उसके बाद इसहाक के पुत्र याकूब के साथ, याकूब बाद में इस्राएल के देश के 12 गोत्रों का **पिता** बन गया।

ये चार कुलपति (पितर) हैं और इनके बारे में बाइबल की पहली पुस्तक - उत्पत्ति में विस्तार से लिखा गया है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2. यहूदियों का युग

इस युग का समय याकूब के मृत्यु के **बाद** आरम्भ हुआ--जो कि अंतिम कुलपति (पितर) था। इस समय में परमेश्वर एक एक जन से बात न करके याकूब के 12 पुत्रों से बात करते थे। इन 12 पुत्रों से मिलकर एक **देश** बना जिसका नाम **"इस्राएल"** पड़ा।

उनके बारे में हम क्या पढ़ते हैं? आइये एक वचन में देखें -

आमोस 3:2 "पृथ्वी के सारे कुलों में से मैंने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है..."

जी हाँ! इस वचन में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल के देश को पहचाना है और उसे अपना लिया है। ये देश परमेश्वर की **"निज प्रजा"** है **(निर्गमन 3:10)**

निर्गमन 3:10 "इसलिथे आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए"

इस **युग** या इस समय कि अवधि में परमेश्वर का इस्राएल देश के साथ किये गये व्यवहारों और उनके अनगिनत **अनुभवों** को शामिल किया गया है जो कि 1800 से भी अधिक वर्षों में फैले हुए हैं।

इस अवधि के दौरान इस्राएल मिश्र देश का **"गुलाम"** बना और फिर परमेंश्वर ने उनको फारोह के हाथों से पूरी सामर्थ्य से **छुटकारा** दिलाया। मूसा के हाथ से इस उद्धार के बारे में बाइबल की दूसरी पुस्तक में **बहुत विस्तार** से दर्ज किया गया है - **निर्गमन**।

तब उस के बाद परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को **"वादा किये गए देश"** - कनान में लाया।

परमेश्वर निरंतर लोगों की **अगुवाई** करते रहे और उन्हें **शिक्षा** देते रहे, उनके बीच में से अनेक **भविष्यद्वक्ताओं** को उठाकर जिन्होंने परमेश्वर के वचनों के द्वारा

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

बातें की और इन्हें भविष्यद्वक्ताओं की **किताबों** में दर्ज किया गया - जो की **यशायाह** कि पुस्तक से लेकर पुराने नियम की अंतिम पुस्तक **मलाकी** तक लिखी गयी है।

यहूदियों के युग के दौरान,
परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल को अपने **दिव्य कानून** दिए **(निर्गमन 24:12)**

निर्गमन 24:12 “तब यहोवा ने मूसा से कहा, “पहाड़ पर मेरे पास चढ़ आ, और वहीं रह; और मैं तुझे पत्थर की पटियाएं, और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा, कि तू उन को सिखाए”

इन कानूनों में **10 मुख्य आज्ञाएं** थीं और लगभग **3600 नियम** थे जिनमें प्रतिदिन के जीवन से जुड़े हर मामले से जुड़ी विधियां थीं यहाँ तक कि “शौचालय” जाने के भी नियम थे - **(व्यवस्थाविवरण 23:12,13)**

व्यवस्थाविवरण 23:12,13 “छावनी के बाहर तेरे दिशा फिरने का एक स्थान हुआ करे, और वहीं दिशा फिरने को जाया करना; और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे; और जब तू दिशा फिरने को बैठे, तब उस से खोदकर अपने मल को ढांप देना”

इन कानूनों के बारे में बहुत विस्तार से **लैव्यवस्था** और **व्यवस्थाविवरण** की पुस्तकों में दर्ज किया गया है।

अंततः इस्राएल में और "व्यवस्था के अधीन" परमेश्वर के पुत्र - **यीशु** का जन्म हुआ।

गलातियों 4:4 “परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ”

कितनी बड़ी और <u>असीम आशीष</u> है ये यहूदियों के लिए!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

लेकिन हम देखते हैं कि यहूदियों ने **यीशु को "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में नहीं पहचाना और साधारणतया उनको तुच्छ जाना!**
और इस तरह यीशु के इन शब्दों के साथ था, यह **यहूदियों का युग** समाप्त हो गया -

मत्ती 23:38 "देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है"

इस के बाद हम दूसरे संसार के अन्तिम युग में आते हैं-

3. सुसमाचार का युग

यह दूसरे संसार के अन्दर तीसरा और अन्तिम **"युग"** या समय की अवधी है।

(इसे चार्ट में देखें)

इसे **"सुसमाचार का युग"** या **"ईसाई युग"** कहा जाता है।

इस सुसमाचार के युग के बारे में हम एक वचन पढ़ते हैं --

रोमियो 16:25-26 "अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के सन्देश के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा, परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं"

जी हाँ! इस **"ईसाई युग"** में **सुसमाचार** या "यीशु मसीह के संदेश का प्रचार" किया जाता है और इस तरह एक **भेद** का पता चला है...!

यह **भेद** क्या है? इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

इफिसियों 3:5-6 "जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है। अर्थात यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

भेद यह है मसीह की **एक** ही देह का चुनाव **(इफिसियों 4:4)**

दोनों यहूदियों और अन्यजातियों में से होना -

यीशु मसीह की कलिशिया (मत्ती 16:18)

हम **कलिशिया** के बारे में **भविष्य के पाठों** में बहुत विस्तार से पढ़ेंगे।

अंततः सुसमाचार के युग के **अन्त** के साथ ही **दूसरा संसार** भी **समाप्त** हो जायेगा!

और हम दूसरे संसार की **समाप्ती** के बारे में क्या **पढ़ते** हैं...?

आइए हम इन वचनों में पढ़ें --

2 पतरस 3: 7 और 10

➡ "पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि जलाए जाएं; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे"

➡ "परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे"

यहाँ प्रेरित पतरस "आग के द्वारा" इस वर्तमान दूसरे संसार के विनाश की बात कर रहे हैं ।

☞ इस बात का मतलब क्या है?

क्या यह **"आग"** साधारण भाषा है जैसे की पहले संसार में बाढ़ का जल था?

आइये हम इस वचन में लिखी भाषा को **ध्यान** से देखें -

2 पतरस 3: 10 "...और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे"

ये **"काम"** क्या है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

वे इस **"पृथ्वी"** पर चल रहे बुरे काम हैं --झूठ, भ्रष्टाचार,चोरी,धोखेबाजी, स्वार्थ

इन कार्यों को एक आग से कैसे जलाया जा सकता है?
वे ज्वलनशील नहीं है!

इस प्रकार से हम देखते हैं कि **"आग"** जो की दूसरे संसार को जलायेगी उसका मतलब कुछ **इशरेवाली भाषा** है!

"आग" के चिन्ह का मतलब क्या है? आइये हम एक वचन में पढ़ें --

सपन्याह 3:8 "...क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी"

जी हाँ! यहाँ पर **"आग"** परमेश्वर के धार्मिक **क्रोध** का एक चिन्ह है और **बुरी व्यवस्थाएं** जो की "पृथ्वी" के चिन्ह को बनाती है, उसके विरुद्ध परमेश्वर के **न्याय** को दर्शाती है। इस पृथ्वी के चिन्ह को जो की बुराई की व्यवस्थाएं हैं उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा जैसा की हम वचनों में पढ़ते हैं - **(यशायाह 24:3)** जब की पृथ्वी के **लोग** बुराई का **बड़ा पाठ** पढ़ेंगे। जैसा की हम एक वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 26:9 "...क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धर्म को सीखते हैं"

जी हाँ! "पृथ्वी" (चिन्ह) की व्यवस्थाओं के इस विनाश के बारे में हम एक और वचन में भी देखते हैं -

2 पतरस 3:10 "...और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे..."

इस वचन में "तत्व" का सम्बन्ध "पृथ्वी" के हिस्सों से है यानी दिखाई देनेवाले मानवीय शासन --राजनैतिक /आर्थिक /धार्मिक /सामाजिक, ये सब के सब ढह

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

("पिघल") जाएँगे और फिर कभी नहीं दिखेंगे, जैसे की एक मोमबत्ती पिघलकर फिर दिखाई नहीं देती है!
इस **"आग"** का उल्लेख **"भारी क्लेश"** के रूप में प्रभु यीशु के द्वारा किया गया है-

मत्ती 24:21,22 "क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा। यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे"

इस प्रकार से **बुरी व्यवस्थाओं** के ऊपर जो बड़ा **न्याय** आएगा और इन व्यवस्थाओं का **विनाश** करेगा उसे इस **"आग"** के रूप में **दर्शाया** गया है और हम वचन में देखेंगे की इस दूसरे संसार के विनाशकारी अन्त से भी बहुत लोग बच जायेंगे -

जकर्याह 14:16 "तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रति वर्ष राजा को अर्थात सेनाओं के यहोवा को दण्डवत करने, और झोंपडिय़ों का पर्व मानने के लिये यरूशलेम को जाया करेंगे"

जी हाँ! दूसरे संसार की समाप्ती केवल महिमामय **तीसरे संसार** की और ले जाएंगे–
"...एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें **धार्मिकता** वास करेगी" **(2 पतरस 3:13)**

☞ कितने कम लोग पृथ्वी पर आनेवाले इस **धार्मिक** संसार के बारे में जानते हैं!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

आइये हम अब इसके बारे में थोड़ा अध्ययन करें–

तीसरा संसार

चार्ट में **"C"** अक्षर तीसरे संसार की अवधि को दिखाता है

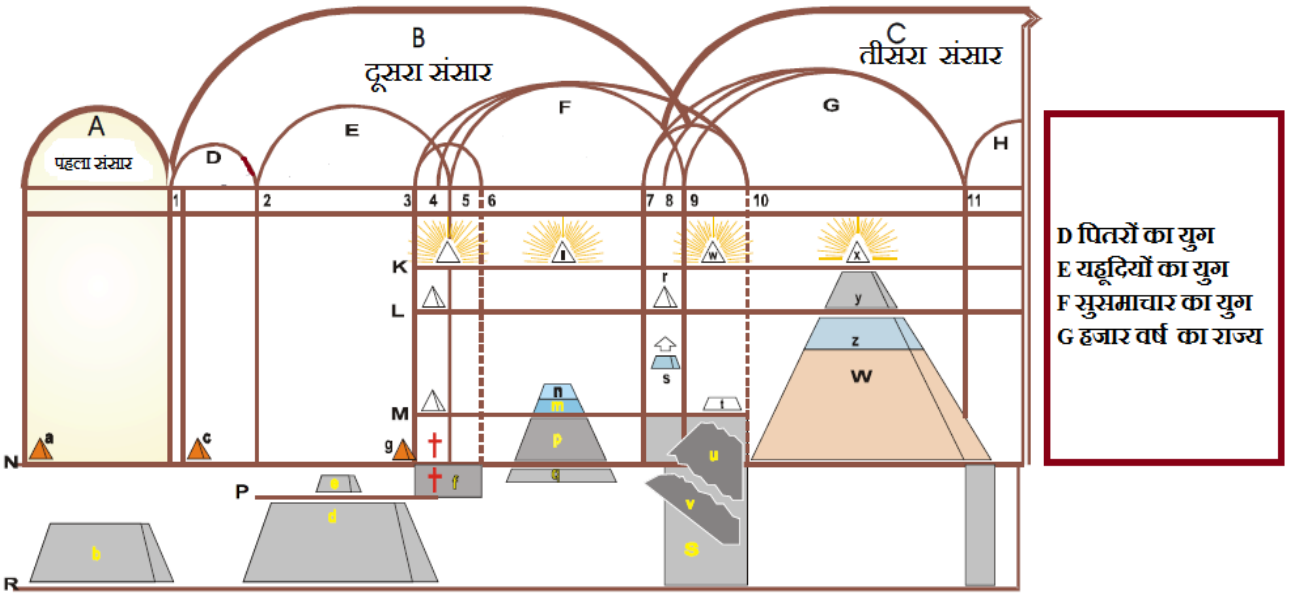

इस के बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

2 पतरस 3:13 "पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी"

इस वचन में हम **आनेवाले** तीसरे संसार के बारे में पढ़ते हैं --जिसमें **"धार्मिकता"** वास करेगी।

और हम ये भी पढ़ते हैं कि एक "**नया** आकाश (स्वर्ग) और एक **नई** पृथ्वी" उस संसार में होगी।

इसका मतलब क्या है?

आकाश (स्वर्ग) ➪ एक **नया** अदृश्य **आत्मिक** शासन या पृथ्वी के मामलों पर नया अदृश्य आत्मिक नियंत्रण।

पृथ्वी ➪ एक **नया** प्रत्यक्ष **मानवीय** (शारीरिक) शासन या पृथ्वी के मामलों पर मनुष्यों का प्रत्यक्ष नियंत्रण।

यह **दोनों** स्वर्ग और पृथ्वी **पहले** और **दूसरे** संसार की तुलना में "धार्मिक" होंगे।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

यह तीसरा संसार **किस** के नियंत्रण में किया जाएगा?

इसका उत्तर हम एक वचन में पढ़ते हैं --

प्रकाशितवाक्य 20:4 "... वे जीवित हो कर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे"

और

प्रकाशितवाक्य 20:6 "...पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे"

जी हाँ! हमारे प्रभु यीशु मसीह अपनी देह यानी कलीसिया (चर्च -1,44,000) के **साथ** मिलकर इस पृथ्वी पर हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे!

यह उस लम्बे समय से चल रही प्रार्थना की पूर्ति होगी --

मत्ती 6:10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो"

इसका मतलब उस **"वादे"** की भी पूर्ति है जो **अभी** के समय में उन सबको दिया गया है जो सच्चाई से यीशु के पदचिन्हों पर चलने के लिये **दुःख** उठा रहे हैं - इसके बारे में हम इस वचन में पढ़ते हैं -

2 तीमुथियुस 2:12 "यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे..."

जी हाँ! मसीह के साथ एक हजार वर्ष के लिये "राज्य" करना **तीसरे संसार** में होगा।

इन सबके बारे में गहरी जानकारी का अध्ययन भविष्य की कक्षाओं में किया जायेगा।

इस तीसरे संसार के आरम्भ का समय दूसरे संसार के अंत के समय के साथ एक ही समय में पड़ता है।
(इसके विवरण और कारणों के बारे में भविष्य के विषयों में बताया जायेगा)

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसलिए "**आग**" जिससे दूसरा संसार "**जलकर**" "**पिघल**" जाएगा, वो **तीसरे संसार** का **आरम्भ** भी है।
जैसा हमने देखा यह आग साधारण भाषा में **नहीं** लिखी गई है बल्कि यह **"आग"** एक **चिन्ह** के रूप में यहाँ पर प्रयोग की गई है और **वर्तमान बुराई की व्यवस्थाओं** के **बिल्कुल** और **अत्यन्त विनाश** का प्रतीक है।
इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

1 कुरिन्थियों 7:31 "...क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं"

☞ उस समय के बारे में और उस **"आग"** के बारे में जिससे दूसरा संसार नष्ट (भस्म) हो जाएगा, हम एक वचन में पढ़ते हैं -

याकूब 5:1-4 "हे धनवानो, सुन तो लो, तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला-चिल्लाकर रोओ। तुम्हारा धन बिगड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए हैं। तुम्हारे सोने-चान्दी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग के समान तुम्हारा मांस खा जाएगी। तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है। 4 देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उनकी वह मजदूरी जो तुम ने धोखा देकर रख ली है चिल्ला रही है, और लेनेवालों की दोहाई, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है"

यहाँ पर प्रेरित याकूब उस–**"आग"** के बारे में भविष्यवाणी करते हैं जो धनवानों के ऊपर **आने वाले** भयंकर **संघर्ष** में **पूंजीपतियों** और **मजदूरों** के बीच में होगा! बाईबल में इस **भयंकर** संघर्ष का **प्रकाशितवाक्य 16:16** वचन में और **योएल 3:14** वचन
प्रकाशितवाक्य 16:16 "और उन्होंने उन को उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है"
योएल 3:14 "निबटारे की तराई में भीड़ की भीड़ है! क्योंकि निबटारे की तराई में यहोवा का दिन निकट है"
में **"आर्मागेदोन"** के नाम से जाना जाता है और यह पूरे **विश्व** भर में होगा! इसका मतलब है महायुद्ध।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

(इस **"आर्मागेदोन"** के विषय में गहरी जानकारी के बारे में हम भविष्य के विषयों में अध्यन्न करेंगे।)

[**कृपया ध्यान दें**: ARMAGEDDON के अंग्रेजी शब्द को हिन्दी बाईबल में **"हर - मगिदोन"** कहा गया है। योएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में इस दिन को **"निबटारे की तराई"** कहा गया है।]

उस समय के हालात के बारे में एक वचन में वर्णन किया गया है --

यहेजकेल 7:19 "वे अपनी चान्दी सड़कों में फेंक देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा; यहोवा की जलन के दिन उनका सोना चान्दी उनको बचा न सकेगी, न उससे उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट भरेंगे। क्योंकि वह उनके अधर्म के ठोकर का कारण हुआ है"

क्या चौकाने वाली स्थिति है!

बस आप उस समय की कल्पना करें!

यीशु ने इसके बारे में एक वचन में बोला है -

मत्ती 24:21 "क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा"

जी हाँ! उस समय को **"भारी क्लेश"** का समय कहा जा रहा है। लेकिन शुक्र है, हमें बताया गया है कि **सारे** प्राणियों को **नष्ट नहीं किया जाएगा**, जैसा की हम एक वचन में पढ़ते हैं -

मत्ती 24:22 "और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे"

जी हाँ! इस भयंकर **"संघर्ष"** को **दिव्य** रूप से रोक दिया जाएगा जब **सारी** व्यवस्थाओं नष्ट कर दी जाएगी और मानवजाति विनम्र हो जाएगी --लेकिन हम वचन में पढ़ते हैं कि बहुत से तब भी जीवित रहेंगे।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जकर्याह 14:16 "तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रति वर्ष राजा को अर्थात सेनाओं के यहोवा को दण्डवत करने, और झोंपडिय़ों का पर्व मानने के लिये यरूशलेम को जाया करेंगे"

विश्व भर में आने वाली इस क्रांति का एक छोटा सा मॉडल अठारवीं सदी के अन्त में फ्रांस की क्रांति में देखा गया था (1790 ईश्वी के आसपास)

विश्व भर की इस क्रांति के अन्त के तुरन्त बाद, जिसे बाद के वर्ष में विश्वयुद्ध के नाम से जाना जाएगा और दूसरे संसार के खण्डरों के ऊपर परमेश्वर का राज्य **प्रत्यक्ष** रूप से इस्राएल के देश में स्थापित किया जाएगा और तब सभी देश धीरे -धीरे इसका हिस्सा बनने का प्रयत्न करेंगे, जैसा कि हम एक वचन में पढ़ते हैं --

जकर्याह 8:22 "बहुत से देशों के वरन सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और यहोवा से विनती करने के लिये आएंगे"

जी हाँ! इस यरूशलेम में केन्द्रित एक भविष्य में स्थापित होने वाले **"सांसारिक राज्य"** और इस का हिस्सा होने की मांग सभी देशों के द्वारा करने की बात का पढ़ना अधिकांश ईशाइयों के लिए **बहुत ही आश्चर्य** की बात है!!
लेकिन इसके बारे में हमें वचनों के द्वारा **बार- बार** बताया जाता है। हम एक वचन में पढ़ते हैं -

मत्ती 8:11 "और मैं तुम से कहता हूं कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे"

यह वचन दिखाता है कि पुनरुत्थान पाए हुए **परमेश्वर के विश्वासी लोग** उस समय **उपदेशक** और **प्रधान** होंगे जो की एक वचन को पूरा करेगा

भजन संहिता 45:16 "तेरे पितरों के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे; जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

ये लोग **"पुरखे"** थे और प्रभु यीशु मसीह के आने से **पहले** ही विश्वासियों में ठहरे और इसलिए इन्हें छोटी झुण्ड या मसीह की कलीसिया (चर्च) का हिस्सा बनने का अवसर कभी भी **नहीं** मिला!
बल्कि वे अपना इनाम यीशु से पाएंगे जो की उनके **"पिता"** होंगे **(यशायाह 9:6)** और उस समय प्रभु यीशु उनके पिता बन जाएंगे और वे उनके **"पुत्र"** बन जाएंगे और ये लोग पूरी पृथ्वी पर "हाक़िम" ठहराए जाएंगे।

(हज़ार साल के राज्य में सभी पितरों का पुनरुत्थान होगा और उस समय प्रभु यीशु उनके पिता बन जाएंगे और वे उनके **"पुत्र"** बन जाएंगे।)

बहुत से लोग इस बात को पढ़कर अचम्भा करते हैं क्योंकि उन लोगों का मानना यह है कि अब्राहम, दाऊद, मूसा आदि स्वर्ग में है।

☞ लेकिन आइये हम जो स्वर्ग से **आए** हैं **उनसे प्राप्त एक <u>जानकारी</u>** पर **<u>ध्यान दे</u>** जो की इस वचन में है --

यूहन्ना 3:13 "और <u>कोई</u> स्वर्ग पर <u>नहीं</u> चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है"

यह कितना स्पष्ट है!!

जी हाँ! वे सारे पितृ लोग परमेश्वर के राज्य में **पुनरुत्थान** पाकर "सारी पृथ्वी पर हाक़िम ठहराए जाएंगे"
हम इन सभी मामलों के कई **विवरण** का अध्यन्न भविष्य की कक्षाओं में करेंगे। इन पितरों का आरम्भ **आबेल** से होता है और **यहून्ना बपतिस्मा देने वाले** तक चलता है जो कि पेंटिकोस्ट के दिन आने के पहले मरने वाले सभी पितरों में आखरी था।

इन पितरों में से कुछ के नाम यह हैं --मूसा, दानिएल, युसूफ, सेमसन, दाऊद। नूहा और सारे भविष्यद्वक्ता आदि।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

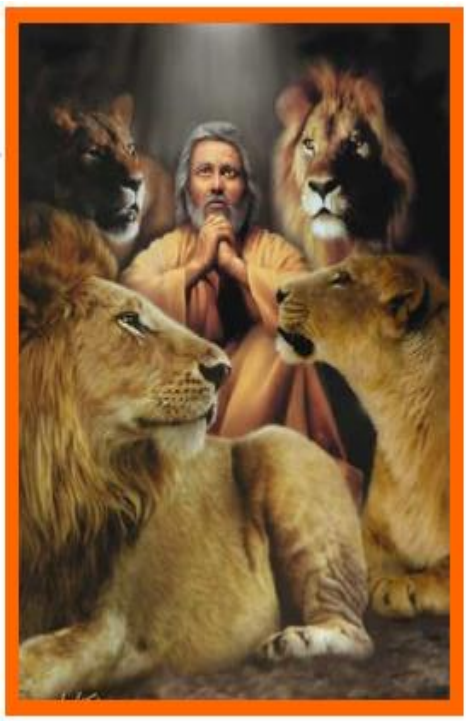

वास्तव में पृथ्वी पर कितने सारे महान प्रधान होंगे!

उस समय के बारे में हम फिर से एक वचन में पढ़ते हैं -

यूहन्ना 5:28 “इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे”

और फिर एक वचन में पढ़ते हैं

दानिय्येल 12:2 “...और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे...”

जी हाँ! वह **समय** मरे हुओं के **जाग उठने** का समय होगा जब-

1 कुरिन्थियों 15:22 वचन के अनुसार

”मसीह में सब जिलाए जाएंगे" **की पूर्ति होगी**!!

और हाँ! यह **समय जगत के न्याय का दिन** भी होगा

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रेरितों के काम 17:31 "क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है..."

और हाँ! यीशु को न्यायी (जज) नियुक्त किया गया है!

झूठी शिक्षाओं और अंधविश्वासों के कारण बहुतों में इस "न्याय के दिन" के लिए भय पाया जाता है!!

➡ हम भविष्य की कक्षाओं में इस दिन के बारे में **विस्तार** से पढ़ेंगे लेकिन वचनों में हम देखते हैं कि यह **"दिन" बड़े आनन्द** का दिन है, जिसके बारे में हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

भजन संहिता 98:8,9 "नदियां तालियां बजाएं; पहाड़ मिलकर जयजयकार करें। यह यहोवा के सामने हो; क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आने वाला है: वह धर्म से जगत का, और सीधाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा"

जी हाँ! इशारे वाली भाषा से हम देखते हैं कि किस प्रकार से न्याय का दिन **आनन्द का दिन** होगा।

☞ ये सारी बातें हम में एक कोतुहल उत्पन्न करती है कि **<u>सचमुच</u>** में परमेश्वर की **<u>ठीक- ठीक</u> इच्छा** पूरी मानव जाति के लिए क्या है!!

आइये हम इसका उत्तर एक वचन में पढ़े--

1 तीमुथियुस 2:3,4 "यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है, जो यह चाहता है, कि <u>सब</u> मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें।"

और इसके बारे में हम फिर से एक वचन में पढ़ते हैं -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

2 पतरस 3:9 "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले"

इसका क्या मतलब है? सब "मनुष्यों का उद्धार" हो इस बात का क्या मतलब है?

क्या "सब मनुष्य" स्वर्ग में जाने वाले हैं -- को "बचाया" जाना या उद्धार के रूप में आज के समय में समझा जाता है?

जैसा की पिछले विषय में देखा जा चूका है कि "उद्धार" शब्द का सम्बन्ध **मृत्यु दण्ड से उद्धार है** जो कि मरे हुओं के पुनरूत्थान के द्वारा मिलेगा।
इसे प्रभु यीशु की **छुड़ौती** के बलिदान के माध्यम से प्राप्त किया गया था। **(1 कुरिन्थियों 15:21,22)**

इसके बाद **"सब मनुष्य"** को मृत्यु से "बचाया जाएगा" और सब को पुनरुत्थान मिलेगा!!
और उसके बाद **सब** लोग "सत्य को भली-भाँति पहचान लेंगे"--
क्योंकि यह आवश्यक है कि सबको उनकी पापी अवस्था से छुटकारा दिलाया जाये और उन्हें **पवित्र किया** जाए और यह काम केवल **सत्य** के द्वारा ही किया जा सकता है, जैसा कि हम एक वचन में पढ़ते हैं -

यूहन्ना 17:17 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है"

इस वचन में अंग्रेजी शब्द SANCTIFICATION
का अनुवाद 'पवित्र' किया गया है। ग्रीक भाषा की बाईबल में इसका मूल शब्द है - hagiazo #37g जिसका अर्थ है -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

a) पवित्र बनाया जाना
b) शुद्ध करना
c) समर्पण करना
d) पाप के मार्गों से अलग होना और परमेश्वर के प्रति समर्पण करना

जी हाँ! पवित्रीकरण (SANCTIFICATION) या पाप के मार्गों से अलग होना केवल सत्य के प्रभाव के अन्दर आने से ही सम्भव हो सकता है।

और उस समय पृथ्वी पर परमेश्वर के द्वारा किये गए प्रबन्ध के बारे में हम एक वचन पढ़ते हैं -

हबक्कूक 2:14 "क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है"

जी हाँ! **सब** लोग यहोवा के **सत्य** वचनों के स्पष्ट ज्ञान के द्वारा अपनी पापी अवस्था से छुटकारा पाने में सक्षम होंगे।
परमेश्वर का वचन स्पष्ट और सरल और सभी के लिए समझने में आसान बनाया जाएगा।

बाईबल में उद्धार के बारे में इस प्रकार से समझा जाता है --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

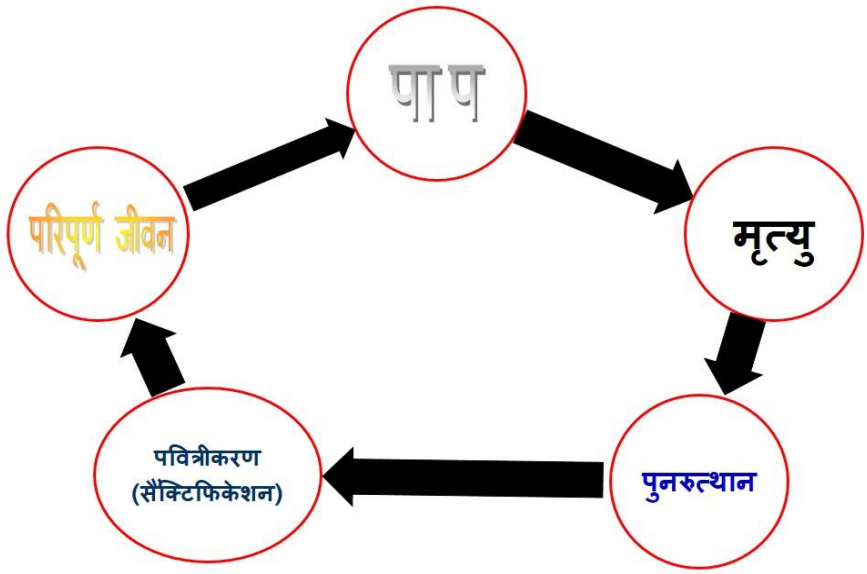

उद्धार का मार्ग

लेकिन यघपि परमेश्वर चाहते हैं कि "सब का उद्धार हो" पर अफ़सोस की बात यह है कि -**तब भी-** कुछ लोग ऐसे होंगे जो धार्मिकता से प्रेम **नहीं करेंगे**।

जैसा की हम वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 26:10 "दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म को न सीखेगा; धर्मराज्य में भी वह कुटिलता करेगा, और यहोवा को माहात्मय उसे सूझ न पड़ेगा"

ये लोग **जिद्दी** हैं और परमेश्वर का और धार्मिकता का विरोध **जानबुझ** कर करते हैं।

वे अपने अन्तिम दण्ड के लिए दण्डित किए जाएगें जैसा की हम इस वचन में पढ़ते हैं -

प्रकाशितवाक्य 21:8 "... सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।"

इस वचन का मतलब क्या है?

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

हम **"आग के झील"** और **"दूसरी मौत"** के दण्ड के बारे में भविष्य में अध्यन्न करेंगे!

इस प्रकार **हज़ार वर्ष के मसीही युग** का समापन आजायेगा!

☞ और अन्त में हम पढ़ते हैं कि उस समय पृथ्वी पर की परिस्थिति क्या होगी --

प्रकाशितवाक्य 21:4 "वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं"

☞ **क्या वादा है!**	**आनेवाले स्वर्ग के लिए!**

जी हाँ! इस प्रकार **तीसरे संसार** का अपना प्रथम एक हज़ार साल का युग पूरा होगा और उसके बाद ये संसार "आने वाले समयों" **(इफिसियों 2:7)**
में प्रवेश करेगा और **पहले** और **दूसरे** संसार की तरह **तीसरे संसार का कोई अन्त नहीं है!**

जी हाँ! यह पाठ अब समाप्त हो गया है लेकिन तीसरे संसार का **कोई अन्त नहीं है!!**

आमीन!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है